CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th Jan. 2022, Revised on 24th Feb. 2022, Accepted 28th Mar. 2022

शोध–आलेख

दिव्यांग बालको की संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन

* शिखा योगी *शोधार्थी*
डॉ. कालिन्दी लालचन्दानी, *शोध निर्देशिका*
भगवन्त विश्वविद्यालय,अजमेर
E-Mail- d_rajnath@rediffmail.com, Mob- 9929643208

मुख्य शब्द– *विशिष्ट शिक्षा, विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चे, वैयक्तिक शिक्षा आदि।*

प्रस्तावना

विशिष्ट शिक्षा, विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की वैयक्तिक शिक्षा है। विशिष्ट शिक्षा का अर्थ है "विशिष्ट प्रकार से निर्धारित अनुदेशन जो विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की अभिनव आवश्यकताओं को कक्षा के अनुदेशन, घर, संस्थान तथा शारीरिक शिक्षा को अन्य परिस्थितियों में पूरा करें।"

शिक्षा सभ्य, सुसंस्कृत एवं प्रगतिशाली मानव समाज के लिए एक आधारशिला का निर्माण करती है। शिक्षा ही एकमात्र वह साधन है जो पशु और मानव में अन्तर लाने का कार्य करती है। शिक्षा ही वह ज्योतिपुंज है जो मानव मस्तिष्क के अन्धकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित करती है।

समाज में विशिष्ट बालकों की शिक्षा वर्तमान में एक समस्या है इस समस्या के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिक भी सतत् प्रयत्नशील हैं। कुछ वर्षों के पूर्व विशिष्ट बालकों को न तो पर्याप्त सम्मान मिल पा रहा था और न ही उनकी शिक्षा की कोई अच्छी व्यवस्था थी परन्तु अब राज्य सरकार द्वारा विशिष्ट बालकों की दशा को सुधारने तथा समाज में सम्मान दिलाने के लिए शिक्षा के माध्यम से काफी प्रयास किये जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप शैक्षिक परिवर्तन ने शैक्षिक समस्याओं, नवीन ज्ञान एवं शैक्षिक तकनीक के माध्यम से शैक्षिक प्रगति ने विशिष्टीकरण की मांग को जन्म दिया है, अतः विशिष्ट बच्चो ं के लिए प्रदान किया जा रहा है। विशिष्ट बालकों की शिक्षा के प्रति आज विश्व समुदाय जागृत हो चुका है।

"सभी के लिए शिक्षा" के संपूर्ण परिप्रेक्ष्य में वैश्विक स्तर पर शिक्षण व्यवस्था के सम्मुख "समावेशन" एक प्रमुख चुनौती के रूप में है। इनका उद्देश्य ऐसे विद्यालयों का विकास है जो विद्यार्थियों की विविधता, विशेष रूप से ऐसे विद्यार्थियों के समूह, जो सीमान्तता, बहिष्करण और निम्न उपलब्धि वाले हैं, की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। विविधता के समायोजन के लिए असामान्य बातों को खुले मन से सुनना, सभी सदस्यों को शक्तिशाली बनाना, निर्धारित तरीकों से विभिन्नताओं को साथ लाना और एक–दूसरे के साथ जीवन जीना सीखना होगा।

माध्यमिक स्तर की अवस्था में बालक जहाँ मानसिक रूप से परिपक्वता की ओर बढते है वहीं उनकी कल्पना, तर्क, चिन्तन, स्मरण क्षमता, उनकी संवेगात्मक बुद्धि तथा उनके शैक्षिक, सामाजिक, पारिवारिक समायोजन एवं उनकी उपलब्धियों में व्यापक बदलाव आता है जिससे उनकी कार्यप्रणाली में भिन्नता दिखलायी पड़ती है। इसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। यदि व्यक्ति अपने संवेगों पर नियंत्रण स्थापित करते हुए तथा प्रभावी चिन्तन को आधार करके कार्य करता है तो इससे उसकी कार्यशीलता बढजाती है, जिसका प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

शैक्षिक आकांक्षा में उपलब्धि की इच्छा सन्निहित रहती है। शैक्षिक आकांक्षा से यह ज्ञान नहीं होता है कि मानव अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कहाँ तक सफल रहा। इससे केवल यह स्पष्ट होता है कि वह क्या प्राप्त करना चाहता है व उसका लक्ष्य क्या है। शैक्षिक आकांक्षा एक उच्च आदर्श होती है जिसकी सभी लालसा तो रखते है, मगर जरूरी नहीं कि वह प्राप्त हो।

इस प्रकार सांवेगिक बुद्धि, समायोजन, शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि घनिष्ट रूप से एक दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित है। उनका एक दूसरे के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। किन्तु क्या सामान्य बालकों के समान ही दिव्यांग बालकों में भी यह सम्बन्ध पाया जाता है? क्या सामान्य बालकों के समान ही दिव्यांग बालकों में सांवेगिक बुद्धि आवश्यक होती है? अतः शोधकर्ती ने **दिव्यांग बालको की संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन** विषय का चयन किया है। जिसके द्वारा माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग बालको की संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया हैं।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्त्व

प्रस्तुत शोध द्वारा प्राप्त परिणाम माध्यमिक स्तर के छात्रों, शिक्षकों तथा नीति निर्धारकों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है।

शोध अध्ययन के परिणाम उन शिक्षाशास्त्रियों, समाज सुधारकों निर्देशनकर्ताओं, परामर्शदाताओं, सलाहकारों व अध्यापकों के लिए उपयोगी होंगे, जो विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन करते हैं। उच्च विद्वतापूर्ण एवं सृजनशीलता युक्त वातावरण उपलब्धि प्राप्त करने हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करने में रुचि रखते हैं तथा पाठ्यक्रम का निर्माण एवं संशोधन करते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता सम्बन्धित विषय में शोधकार्यो की अल्पता के कारण भी है। शोधकर्ती ने साहित्यिक सर्वेक्षण के दौरान यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि सम्बन्धित क्षेत्र में शोधकार्य अल्प मात्रा में ही हुए हैं। सांवेगिक बुद्धि, एक ऐसा सम्प्रत्यय है जो छात्रों के मानसिक पक्षों एवं उनके आनुभविक पक्षों के समन्वय से विकसित होता है।

अतः प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया जाना सर्वथा उचित एवं उपयोगी है क्योंकि यह बालक के किशोरावस्था का काल होता है। इस काल को बालक के जीवन का निर्माण काल माना जाता है। इस अवस्था में जिन गुणों, आदतों एवं मनोवृत्तियों का निर्माण हो जाता है उसका अमिट प्रभाव बालक के जीवन पर पड़ता है।

समस्या कथन

दिव्यांग बालको की संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित रहेगा –

माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक आकांक्षा स्तर, समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

2. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

3. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

4. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध में प्रयुक्त शब्दावली

संवेगात्मक बुद्धि – एक ऐसी योग्यता है जिसमें व्यक्ति स्वंय की तथा अन्य व्यक्तियों की भावनाओं को पहचानते हैं जिससे हम स्वयं को अभिप्रेरणा देते हैं तथा अपनी भावनाओं को अन्य व्यक्तियों के साथ संबंध के लिए प्रबन्ध करते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति में आकांक्षा अवश्य रहती है। यह अलग बात है कि किसी में उच्च व किसी में निम्न आकांक्षा रहती है। आकांक्षा यह नहीं बताती कि व्यक्ति अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कितना सफल रहा, बल्कि इस बात का उल्लेख करती है कि व्यक्ति क्या प्राप्त करना चाहता है? या उसका लक्ष्य क्या है? आकांक्षाओं को उच्च आदर्श भी कहा जा सकता है। जिन तक पहुंचने की हम लालसा रखते हैं, किन्तु यह जरूरी नहीं कि वे प्राप्त हो।

शैक्षिक क्षेत्र में अपने निष्पादन स्तर को जानते हुए उसमें भावी निष्पादन के जिस स्तर पर पहुंचने की व्यक्ति आशा रखता है उसे शैक्षिक आकांक्षा स्तर कहते है।

समायोजन आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच एक सन्तुलन कायम रखने की प्रक्रिया है।

हबेल, आर. के. के अनुसार – ''शैक्षिक उपलब्धि छात्रों द्वारा ग्रहण किया गया ज्ञान एवं क्षमता है। निष्पत्ति उपलब्ध परीक्षण वह अभिव्यक्त है जो एक विशेष पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ एवं कुशलता का मापन करता है। इसका निर्माण विशेष शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव को जानने में किया जाता है। विषय या विभिन्न विषयों का परीक्षण किया जाता है क्योंकी किसी भी निष्पत्ति परीक्षण का उद्देश्य होता है कि अमुक विषय में व्यक्ति को कितना और क्या–क्या सीखा है।

दिव्यांग बालक का अर्थ– कुछ बालकों में जन्म से शरीरके किसी अंग में दोष होता है, या बाद में किसी बीमारी, दुर्घटना,आघात या चोट लगने के कारण उनके शरीर में कोई अंग दोष–युक्तहो जाता है, उन्हें 'दिव्यांग ' बालक कहते हैं। क्रो और क्रो के शब्दों में, ''एक बालक जिसमें कोई इस प्रकार का शारीरिक दोष होता है जो किसी भी रूप में उसे सामान्य क्रियाओं में भाग लेने से रोकताहै या उसे सीमित रखता है, उसको हम विकलांग (शारीरिक न्यूनता से ग्रस्त) बालक कह सकते हैं।''

अध्ययन की परिसीमाएँ

1. वर्तमान अध्ययन केवल राजस्थान राज्य के जिलों तक सीमित रहेगा।

2. अध्ययन हेतु माध्यमिक स्तर के दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों को चुना जायेगा।

3. न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 150 बालकों का चयन किया जाएगा,जिनमें 75– 75 दिव्यांग दोनों श्रेणियों के होंगे।

4. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग बालको की संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक आकांक्षा स्तर, समायोजन एवम् शैक्षिक उपलब्धि का ही अध्ययन किया जाएगा।

5. अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

6. उपकरण के रूप में शैक्षिक निष्पत्ति के लिए विद्यालय अभिलेखों के द्वारा एवं परीक्षा परिणाम का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है।

7. संवेगात्मक बुद्धि हेतु डॉ. एस.के. मंगल व श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया जाएगा।

8. शैक्षिक आकांक्षा स्तर हेतु डॉ. वी.पी. शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता द्वारा तथा समायोजन हेतु प्रो. आर.पी. सिंह और के. पी. सिन्हा निर्मित मापनी का प्रयोग किया जाएगा।

9. सम्भावित परिकल्पनाओं के आधार पर सांख्यिकी के रूप में "मध्यमान", "प्रमाप विचलन", "टी परीक्षण" का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है।

शोधकर्ती द्वारा दो प्रकार के **दिव्यांग बालकों यथा :– मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों** को अपने शोध अध्यन में न्यादर्श के रूप में लिया है।

वर्तमान शोध कार्य में अनुसंधान विधि

वर्तमान शोध में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का संबंध वर्तमान से बताया है तथा इसके अन्तर्गत अनुसंधान के विषय का स्तर निर्धारित करने का प्रयास किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

किसी भी शोध कार्य हेतु दत्त संकलन आवश्यक होता है। दत्त संकलन के लिए शोधकत्री को ऐसी प्रविधियों का सहारा व सहयोग लेना होता है जो परिणाम एवं गुणा की दृष्टि से उपयुक्त तथा यथोचित दत्त संकलन में शोधकर्ता के लिए आवश्यक हो। अतः अध्ययनकर्ता के लिए उपकरणों के चयन का अत्यन्त महत्व है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सम्बन्धित तथ्यों के संकलन हेतु निम्नलिखित प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया जावेगा।

1. **संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण –** डॉ. एस.के. मंगल व श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित प्रमापीकृत परीक्षण ।
2. **शैक्षिक आकांक्षा स्तर –** वी.पी. शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित प्रमापीकृत परीक्षण।
3. **समायोजन हेतु** – प्रो. आर.पी. सिंह और के.पी.सिन्हा द्वारा निर्मित प्रमापीकृत परीक्षण।
4. **शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु** विद्यालय अभिलेखों के आधार पर तथा परीक्षा परिणाम का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन के चर

क्रलिंगर के अनुसार – ''चर वह गुण है जिसके विभिन्न मूल्य हो सकते है।'' चर दो प्रकार के होते है – स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर। शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर निम्नलिखित है –

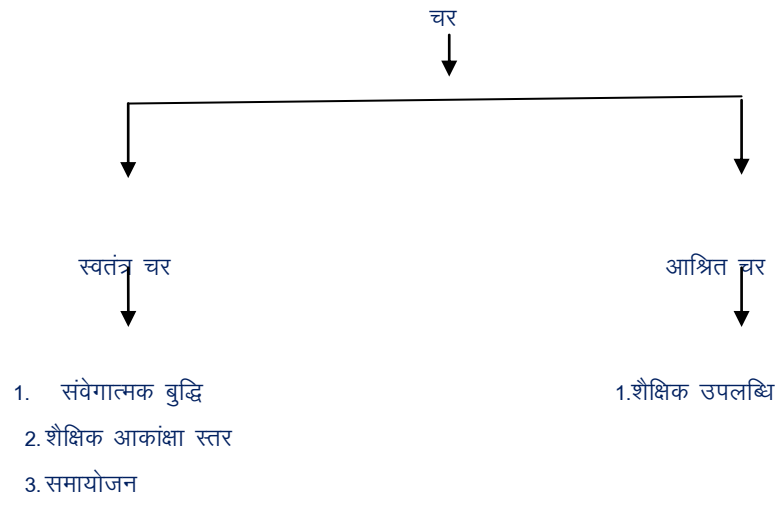

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोधकार्य में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी–मूल्यांकन करने के लिए टी–परीक्षण इत्यादि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है।

वर्तमान अध्ययन के शोध निष्कर्ष :–

कार्य समाप्ति के पश्चात परिणाम अथवा निष्कर्ष निकाला जाता है एवं उसके गुण एवं दोषों का पता लगाया जाता है। वर्तमान शोध कार्य के प्रभाव को जानने के लिए निष्कर्षो का वर्णन किया गया है –

❖ **माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की संवेगात्मक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन**

- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग दृष्टि बाधित बालकों की कुल संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का कुल मध्यमान, माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर बालकों की कुल संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों के कुल मध्यमान से आंशिक अधिक है।

❖ **माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन**

- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर बालकों के कुल शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों का कुल मध्यमान, माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग दृष्टि बाधित बालकों के कुल शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांकों के कुल मध्यमान से आंशिक अधिक है।

❖ **माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों के समायोजन के सन्दर्भ में अध्ययन**

- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों के कुल समायोजन एवं समस्त आयामों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- माध्यमिक स्तर में दिव्यांग दृष्टि बाधित बालकों के कुल समायोजन के प्राप्तांकों का कुल मध्यमान, माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर बालकों के कुल समायोजन के प्राप्तांकों के कुल मध्यमान से आंशिक अधिक है।
- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग दृष्टि बाधित बालकों के समायोजन के प्रथम आयाम सामाजिक समायोजन के प्राप्तांकों का कुल मध्यमान, माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर बालकों के समायोजन के प्रथम आयाम सामाजिक समायोजन के प्राप्तांकों के कुल मध्यमान से कुछ अधिक है।
- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर बालकों के समायोजन के द्वितीय आयाम संवेगात्मक समायोजन के प्राप्तांकों का कुल मध्यमान, माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग दृष्टि बाधित बालकों के समायोजन के द्वितीय आयाम संवेगात्मक समायोजन के प्राप्तांकों के कुल मध्यमान से कुछ अधिक है।
- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग दृष्टि बाधित बालकों के समायोजन के तृतीय आयाम शैक्षिक समायोजन के प्राप्तांकों का कुल मध्यमान, माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर बालकों के समायोजन के तृतीय आयाम शैक्षिक समायोजन के प्राप्तांकों के कुल मध्यमान से कुछ अधिक है।

❖ **माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन**

- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर एवं दृष्टि बाधित बालकों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया।
- माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग मूक–बधिर बालकों के कुल शैक्षिक उपलब्धि स्तर के प्राप्तांकों का कुल मध्यमान, माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत दिव्यांग दृष्टि बाधित बालकों के कुल शैक्षिक उपलब्धि स्तर के प्राप्तांकों के कुल मध्यमान से सार्थक अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ

समाज अपने साधनों के द्वारा नागरिकों में अपेक्षित गुण विकसित करने का प्रयास करता है। प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में शिक्षा छात्रों में दया, स्नेह, सदाचार, नैतिकता, बन्धुत्व, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास करती थी किन्तु आज शिक्षा के उद्देश्य एवं परिणाम पाश्चात्य शैक्षिक प्रणाली, भौतिकवादी चिन्तन, औपचारिक सम्बन्धों आदि के द्वारा परिवर्तित हो चुकी है। आज छात्रों में सांवेगिक अस्थिरता दिखायी पड़ती है जहां छात्र बहुत जल्द परिस्थितियों से निराश अथवा अति उत्साहित एवं अति उत्तेजित हो जाते हैं। इसमें भी दिव्यांग बालक तो सामान्य परिस्थितियों में भी धैर्य एवं साहस के साथ कार्य नहीं कर पाते हैं, जिसके कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

आज शिक्षा मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक व्यवस्था पर आधारित है, मनोवैज्ञानिक कारक बालक की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। छात्र–छात्राओं में संवेदनशीलता, प्रसन्नता, अज्ञानुकूलता, समायोजन, चिन्तारहित होना आदि कारक पूरी तरह से शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। इस तरह से किसी भी बालक की, चाहे वो सामान्य हो या दिव्यांग, शैक्षिक उपलब्धि पर इन क्रियाओं का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

इसका महत्व सामाजिक एवं शैक्षिक दोनो दृष्टिकोणों से उपयोगी है। दिव्यांग बालकों के संवेगों पर उनकी समायोजन क्षमता का भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि समायोजन बालक की उनकी सीखने की योग्यता एवं नियंत्रण शक्ति को बढाती है क्योंकि दिव्यांग बालक अपने संवेगों के प्रति जितना दृढ ,संतुलित और नियंत्रित होगा उतना ही वह अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित कर सकता है। जिससे वह अपने लक्ष्य की ओर सरलता से केन्द्रित हो सकता है। इसका प्रभाव उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

इस प्रकार सांवेगिक बुद्धि , समायोजन, शैक्षिक आकांक्षा स्तर और शैक्षिक उपलब्धि घनष्टि रूप से एक दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित हैं। शिक्षा का माध्यमिक स्तर छात्रों की किशोरावस्था का काल होता है। इस अवस्था में सभी बालकों में संवेगों की प्रबलता, विरोधी मनोदशाएँ, शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन, विचारों में अस्थिरता, तर्क, चिन्तन एवं कल्पना शक्ति में तीव्रता तथा भावनात्मक रूप से जुड़ना, वीर पूजा की भावना, आदि मानो–शारीरिक गुणों का विकास अत्यन्त तीव्र गति से होता है। ऐसे मे दिव्यांग बालको की संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं समायोजन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- भटनागर, सुरेश (2006) शिक्षण अधिगम विकास का मनोविज्ञान, मेरठ, सूर्या पब्लिशर्स आगरा

2- बेस्ट, जॉन डब्ल्यु (2011) "रिसर्च इन एजुकेशन", प्रिंटिंग हाल प्रा. लि. नई दिल्ली

3- गुप्ता, एस.पी., अल्का गुप्ता (2013) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन

4- माथुर,एस.एस. (2012) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

5- ओड़, लक्ष्मीलाल (2012) शिक्षा के नूतन आयाम, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

6- पंवार, एस. एवं उनियाल, एन.पी. (2008) ''उच्च प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के समायोजन एवं माता–पिता का उनके प्रति व्यवहार का एक तुलनात्मक अध्ययन'', प्राथमिक शिक्षक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, वर्ष 33, अंक 1, जनवरी 2008

7- पाण्डे, पी.एस. (1981) ''सामाजिक–आर्थिक अवसर एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, पी.एच.डी. शोध प्रबंध, काशी विश्वविद्यालय, रिव्यू ऑफ एजुकेशन रिसर्च, वाल्यूम, 75, पेज नं. 23

8- राय, पारसनाथ (2013) अनुसंधान परिचय, अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा

**** Corresponding Author***

शिखा योगी *शोधार्थी*

डॉ. कालिन्दी लालचन्दानी, *शोध निर्देशिका*

भगवन्त विश्वविद्यालय,अजमेर

E-Mail- d_rajnath@rediffmail.com, Mob- 9929643208